

[illegible]

ॐ श्रुगम्यमृनिष्ठद्वैतं, दक्षिणादिष्टियस्त्रिग। वृद्धनूयधनगम्य, ॐ
 उद्योदमृद्वैतं। कमलुनमृद्वैतं, दक्षुवाविवनयुदं। कृष्णादिनाहनी
 यके, ॐ ह्यामृनधनमृनि। नवंविधमृननूयं, आपत्यनमृनयिनी। सर्व
 यायेविति मृकं, विष्णुलाकं सगृह्णति। ध्यानवृत्त्यं म। मृद्वैतं
 मृद्वैतं। ॐ काशयव्ययुनीकासं, अग्निमान्नतर्हर्व। मित्राव
 नूनयायुगं, कृष्णयातितममृन। हृदयादि। ह्यायनमृग। ॐ ह्यायनम
 मिमाहादव, अमृत्त्यमृनियुर्गैव, चतुर्वर्गैरुर्लक्षव, ममयद्वैतं ग्राह्य।

[illegible]

नमः॥ उं यत्र सायनमः॥ उं यत्रासनायनमः॥ उं अष्टाविंशतिजवि
थानमः॥ अवाहनादि॥ यनःयूजन॥ उं मार्कण्डेयानमः॥ उं साः
नं कायनमः॥ उं साकल्यायनमः॥ उं अगत्यायनमः॥ उं दिव्यक
र्मनमः॥ उं अग्न्यायनमः॥ उं रोगवायनमः॥ उं चयनमः॥ उं
ओर्वीयनमः॥ उं अष्टक्यायनमः॥ उं मातुष्यायनमः॥ उं अग्नितुल्या
यनमः॥ उं अग्न्यायनमः॥ उं विष्णवायनमः॥ उं कोटिायनमः॥ उं
आसायनमः॥ उं नक्षत्रायनमः॥ उं लामसायनमः॥ उं कल्यायनमः॥

॥ अविष्णुयनमः॥ उं आध्यायनमः॥ उं वाल्मीकायनमः॥ उं विष्णु
लायनमः॥ अवाहनादि॥ अग्न्यायनमः॥ उं सर्वनीर्धमयं अग्न्यायनमः॥
नमः॥ याद्वमावमनंदेवः कल्याणं कृण्वतु॥ अथ न कलिलान्
मधुसूतानं देवः सर्वनिर्धमयं॥ अथ न कामयुरुवन्तः समग्र
कलितारुव॥ अथ॥ अथ न यनजगत्सर्वं वरुयमयजायनं॥ अथ न देव
वर्तुमयादहं॥ सर्वगतस्तरुलाकृत्॥ अथ न॥ उं लंलाकसादिलोक
रुतातीयत्रिवारक॥ अथ न गगनप्रयत्नं च न नागूत्रलागन॥ ना
अथ च न॥ उं कथं नागूत्रकृत्॥ नातागन्धसमविनं॥ अथ नमि

श्री लार्थय, महामुनियुसिदम॥ दियाजजा नका॥ उंसकनं नू सभा
यूकं, वृक्षनातिमिर्नं वृना॥ ॐ दं ज्ञाय विन नू, गृहानमुनियूजव
॥ सा लाना॥ ॐ गृहीषवीजं यागस, जानियूयसमूहवा॥ नाना ययस
गर्भद्रा, ययानियुतिगृद्वर्णा॥ मालायय॥ ॐ नमः ह्यवदवश
कृमया निसमूहवा॥ सानदा निचयूयानि, गृहानमुनियूजव
इवोकेन॥ ॐ काशयययुनिकसं, अग्निमात्रतससुर्व॥ मिग्रावतन
यायगु, कृमया निसमसुन॥ अनियूय॥ ॐ जानीयूय ह्यगृह्य कृ
शययथे हस हस हने॥ कशमालंज त्रि ह्यव, यजयत्कृमयानिजं॥

धवत॥ ॐ कदर्थे हस स जान, नयविर्नं दमहृत् हं॥ गृहीर्णकृमसं र
न, हकिम कि उद हिमे॥ यद्रा॥ ॐ ह्यव ह्यव नी य ह्य लिक, ह्यव कम
ल हस हने॥ ह्यव अं वृज य यं च, यद्रा यययं नमसुन॥ नी ला य न॥ ॐ
नी ला य नं च यूयानि, वे धिल स वि न स नि॥ क श्रू वि व त न त ह्य, नी ला
य न त म सु न॥ का श्रू॥ क श्रू स व॥ ॐ या ज यू नी न म सु ह उ, स वि य
नी व न त न॥ ला या म द्रा यू नि ह्य मा न या हो न मि न म सु न॥ ॐ ल
श॥ ॐ ने ला क या व नं य गुं, उ ल श ह त्रि व ल स य॥ नी र्थ र न ज ग न
स, कृ म या नि न म सु न॥ न म व ल स य न॥ ॐ वृक्ष ल न म॥

ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ ब्रह्माय नमः ॥ ॐ गंगायै नमः ॥ ॐ यमुनायै नमः ॥ ॐ सरस्वती
देव्यै नमः ॥ ॐ गङ्गायै नमः ॥ ॐ जम्बूकायै नमः ॥ ॐ त्रिमूर्धायै नमः ॥ ॐ
सकलायै नमः ॥ ॐ मार्कण्डेयै नमः ॥ ॐ शत्रुघ्नायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ
कृष्णायै नमः ॥ ॐ बाल्यायै नमः ॥ ॐ हनुमतायै नमः ॥ ॐ यमदण्डायै नमः ॥
ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ सकलायै नमः ॥ ॐ आदीत्यायै नमः ॥ ॐ नवग्रहायै नमः ॥ ॐ
श्यामलपुत्रायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ श्रीगणेशायै नमः ॥ ॐ महालक्ष्मि
सहिनायै नमः ॥ ॐ हनुमतायै नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥
ॐ विष्णवे नमः ॥

नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥
ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥
ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥
ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥
ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥
ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥
ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥
ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥
ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥
ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥ ॐ अर्जुनायै नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ कल्याणायै नमः ॥

ॐ स्वस्ति नमः ॥ ॐ व ह्रीं नमः ॥ ॐ सर्व कृपा
नामः ॥ ॐ सर्व रूपाय नमः ॥ ॐ सर्व विष्णवे नमः ॥ ॐ वाहनादि
गवयनि युजाज्जाकाखाना ॥ ॐ गवयय नमः ॥ ॐ सिद्धि विनायकाय नमः
॥ ॐ गवयय नमः ॥ ॐ गजाननाय नमः ॥ ॐ लम्बादनाय नमः ॥ ॐ नृ
कवताय नमः ॥ ॐ हलम्बाय नमः ॥ ॐ मूखवाहनाय नमः ॥ ॐ यत्र
हस्तानमः ॥ ॐ वाहनादि ॥ ॐ मूखवाहनाय नमः ॥ ॐ तदयिनमः ॥

ॐ रुद्राय नमः ॥ ॐ सुमनसाय नमः ॥ ॐ सुत्ररितमः ॥ ॐ सु रुद्राय नमः
नमः ॥ ॐ कयिलादिष्टके ॥ ॐ गवयय नमः ॥ ॐ वाहनादि ॥ ॐ कोमाय नमः
॥ ॐ उक्ताय नमः ॥ ॐ माहयय नमः ॥ ॐ कोमाय नमः ॥ ॐ वेष्टे
नमः ॥ ॐ वात्राय नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥ ॐ यामरुद्राय नमः ॥
ॐ महालाय नमः ॥ ॐ मयूरवत्रवाहनाय नमः ॥ ॐ रक्तलाचनाय नमः
ॐ कोमाय नमः ॥ ॐ वाहनादि ॥ ॐ ज्जाकाखाना ॥ ॐ गवयय

ॐ शास्त्रार्थप्रणमः ॥ ॐ ताराप्रणमः ॥ ॐ सुधाशिवप्रणमः ॥ ॐ
गृहलक्ष्मीप्रणमः ॥ ॐ ब्रह्मदेवताप्रणमः ॥ यूनः कलसयूगा ॥ ॐ
श्रुतिप्रदिनप्रणमः ॥ ॐ वृत्तिप्रदादिनिधिप्रणमः ॥ ॐ अ
श्रुतिप्रदिनकुरुप्रणमः ॥ ॐ विष्णुकादिप्रणमः ॥ ॐ भस्व
दिवादिप्रणमः ॥ ॐ ब्रह्मादि लोकायात्रप्रणमः ॥ ॐ वृद्धलक्ष्मी
प्रणमः ॥ ॐ विष्णुवत्प्रणमः ॥ ॐ ब्रह्माप्रणमः ॥ अथाहनादि ॥ धिया ॥ ॐ वृद्ध

प्रदयदवध ॥ वदनात्रुनिर्मितं ॥ ब्रह्मनरुगवदवः कुरुप्रानितनमा
सुग ॥ दीया ॥ ॐ ॐ अग्निप्रोक्तिविष्णुनि विष्णुप्रोक्तिनत्वेवच ॥ तमवः
सर्वप्रानितनां दीयाप्रयुक्तिप्रणां ॥ नेवय ॥ ॐ यक्षयनुविस्ताना
कुरुविष्णुनकुलसायिते ॥ ब्रह्मदेवताप्रणमः ॥ विष्णुमत्तनमा
सुग ॥ सिसामासा ॥ ॐ रुलं यत्रसुप्रमादि ॥ ब्रह्मदेवताप्रणमः ॥
गुरुप्रानितनमा ॥ मयादलं सुयक्षव ॥ अथ ॥ अथादि ॥ ॐ भस्व
प्रसहिर्गदीनयुद्धवृक्षकलाविर्ग ॥ रुलचलनगमा ॥ अथ ॥ अथप्रयुक्ति

श्यातमानमायसमप्रवृत्तमदेव, अंगस्यवद्वनजस्ता। तमस्तु
 ग्रहन्माय, त्रियुयव्वविताजिते॥ तमस्तु हृष्टिन्त्यायाय, स्तिनि
 नूयायनतम। दयाममावदवाय, स्तननूयायनतम॥ सर्वत्राग
 हन्तायाधि, सर्वयायहर्तयर्त। नाशायदूखदानिर्दु, अल। क्षी
 मन्तनासर्त॥ सर्वसंयलिदालक्षि, सर्वसौख्यदायक॥ धर्माथ
 कामभाकर्त्त, वृत्तयागुयसक्षिर्त। नाशनाशस्वर्तदातु, यन्त्र
 कर्तवीसदा॥ तमस्तु श्यातनूयाय, लायाम्नायनतम॥ सुद

आर्त्तं ॥ नृपद वनमसुखं ॥ यासां मित्रादि ॥ अगुगन्धदि ॥ स मम
 मनुल विस्तर्त्तुनं ॥ ब्रह्मदयुज ॥ नमः प्रत्युखवलायां अद्यो ॥ क
 सकनस ॥ ॐ अद्य ॥ ॐ स्वाम् ॥ काशद्युनदियंदद्यात् ॥ नमः
 लक्षयुर्ववत्युजयन् ॥ दक्षिणययुर्त्तं ॥ दवविस्तर्त्तुनं ॥ ॐ गच्छ
 गच्छयनं लूनं, यन्ताममनियर्त्तं ॥ यगुवृक्षादथादवा, सु
 यगुमृनिष्ठवत् ॥ अगुगन्धदि ॥ न्यासलिकाया ॥ सर्वस्तः

स्वा

लानवासारुवन्तु ॥ वलिक्काया ॥ अरिश्चक ॥ वदतदि ॥
 यूर्ध्वचन्द्र ॥ साक्षी थय ॥ नृपद अगुगन्धदि विधिसमाक ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ सम्बन्ध ॥ ५५ हाद्रववदि ॥ सनिष्ठ
 नवानकृद्धधसारुलिवायधूनकाङ्गता ॥ अदिसुर्द्धमसु
 र्द्धवा, ममदाथानदिग्रन् ॥ ५५ रुमसुलखकसर्वेदपाञ्च
 रु ॥ धसारुलिधनयगिनाउगन, धर्मजययादयगादयकाद

॥ अरु ॥
 ॥ अरु ॥
 ॥ अरु ॥
 ॥ अरु ॥

रथानां यन्त्रयन्त्राभावात् सर्वानन्ददा

五

ॐ धर्मो यनम ॥ ॐ ज्ञानायनम ॥ ॐ वेदायनम ॥ ॐ
नेष्टव्यो यनम ॥ ॐ अर्धो यनम ॥ ॐ अज्ञानायनम ॥ ॐ
वेदायनम ॥ ॐ अनेष्टव्यो यनम ॥ ॐ उष्टव्यो यनम ॥
आवाहनादि ॥ ॐ अष्टानां यनम ॥ ॐ अष्टानां यनम ॥ ॐ
कामनम ॥ ॐ अष्टानां यनम ॥ ॐ अष्टानां यनम ॥ ॐ

संज्ञा २

[illegible]

ॐ मित्रवधमातायतीति नमः॥ ॐ साकृद्विनामनि शिरसि
यनमः॥ ॐ दसदिशवायवहाधतिनी कवचायनमः॥ ॐ यक्ष
मधायनी नैत्रायनमः॥ ॐ तिकनार्थ्यास॥ ॐ शिवाधनं॥ ॐ र्ध्या
रुद्रा॥ ॐ त्मायुजा॥ ॐ दानयुजा॥ ॐ लयनयनमः॥ ॐ नृत्यानमः
नन्दीननमः॥ ॐ लोकासायनमः॥ ॐ धर्मायनमः॥ ॐ नायनन॥ ॐ
र्यायनमः॥ ॐ धर्मायनमः॥ ॐ लोकायनमः॥ ॐ देवायनमः॥ ॐ

ॐ नेत्रायनमः॥ ॐ र्ध्यायनमः॥ ॐ र्ध्यायनमः॥ ॐ र्ध्यायनमः॥ ॐ र्ध्यायनमः॥
दी॥ ॐ धर्मायनमः॥ ॐ नन्दीनायनमः॥ ॐ लोकायनमः॥ ॐ धर्मायनमः॥
नमः॥ ॐ नायनमः॥ ॐ यक्षायनमः॥ ॐ यक्षायनमः॥ ॐ यक्षायनमः॥ ॐ यक्षायनमः॥
नायनमः॥ ॐ कलिकायनमः॥ ॐ सिंहनायनमः॥ ॐ ध्यान॥ ॐ स्वर्कव
र्कदीपार्या॥ ॐ ग्रिनृकमलाननं॥ ॐ सिंहपद्मासनायनमः॥ ॐ सिंहपद्मासनायनमः॥
रुषिनी॥ ॐ यक्षायनमः॥ ॐ यक्षायनमः॥ ॐ यक्षायनमः॥ ॐ यक्षायनमः॥ ॐ यक्षायनमः॥
ॐ देवायनमः॥ ॐ देवायनमः॥ ॐ देवायनमः॥ ॐ देवायनमः॥ ॐ देवायनमः॥

यावाभ. दकि (ए वनदा गुल खर्गे धर्मे धना वाधा, वाम दकि लशा
क मातु। सर्व स कलु सं पूर्य लहानी यन म ध्वनी॥ रु दया दि ग्रीया ॐ
सि॥ (गोत्री पार्वती लहानी दे वी नम॥ लहानी दे वी मरुत आशु
नम॥ देवी वन कामिनी मिश्र व ध मातायनी प्रे सा क वि काम नी दे
श दि ग वायु वं ध निती व न्द व लु म थ य ली लहानी मरुत य स्वाहा॥
ॐ मि मृ हि म रु॥ ॐ अयाय नम वि श्याय नम, अ जि नाय नम, सु प
त्रा जिय ना नम ज रु न्द नम॥ रु रु न्द नम मा रु न्द नम, आ क ष म्भ न

म॥ आ वाह नादि॥ ॐ शं क नाय पार्वती सहिताय नम॥ सं मुख गि निजा स
हि ताय नम॥ मा रु द वाय (गोत्री सहिताय नम॥ स्म न व वि श्म ला की
सहि ताय नम॥ धि वाय शा सहिताय नम॥ व शु प न य सहिताय
नम॥ स्म रु द य (गोत्री दे वी सहिताय नम॥ रु नाय म ही ल सहिताय
नम॥ रु द्राय व न्द रु वा सहिताय नम॥ वृ ष रु ध जा य सहिताय नम॥
शं कि १

श्रीवाहनादि॥सर्वव्यापिनीस्वस्तीयेनमः॥ॐ नमो हृदि येनमः
॥ब्रह्मभयनमः॥ब्रह्मभयनमः॥ॐ रायनमः॥ॐ रायनमः॥ब्र
ह्मपायनमः॥श्रीवाहनादी॥नमो कलसयुक्ता॥श्रीधनशकयन
मः॥अनकासनायनमः॥कन्दायनमः॥नारायणभयनमः॥पद्म
यनमः॥पद्मयनमः॥केशनायनमः॥कर्तिकायनमः॥हिसह

नायनमः॥श्रीवाहनादी॥शिवकलशायनमः॥शक्ति कलश
यनमः॥नमो ॐ नमो कलसयुक्ता॥ॐ नमो नमः॥ॐ नमो नमः॥
अस्ययनमः॥वन्भयनमः॥वायुवेनमः॥कृष्णायनमः॥ॐ नमः
नायनमः॥विष्णवेनमः॥ब्रह्मभयनमः॥गलपत्रयनमः॥शत्रु
हानमः॥श्रीवाहनादी॥ॐ नमो मायनमः॥नमो नमः॥व्यासनामः

हनुमन्नायनम, विहीरुभयनम, कृपाकार्थनायनम, यशुनामायनम, नार्क
(सुयायनम, ॥ श्रीवाहनदी ॥ अदिहयनम, हामायनम, अंश
नायनम, वृक्षयनम, वृहस्पतयनम, अक्रायनम, जनेश्वरा
यनम, नाहवेनम, केतवेनम, ॥ श्रीवाहनदी ॥ जन्मननम, शान
न, सक्तीनम, उक्रायनम, उक्तीश्वरनम, नागनायनम, सूर्यायनम
॥ श्रीवाहनदी ॥ वृक्षलनम, प्रतितार्थनम, गालसयूजा ॥

अंशनायनम, विघ्ननायनम, नृकदनायनम, मृषासना
यनम, मृषावाहनायनम, लम्बायनम, गजवक्रायनम
पशुहस्तायनम, सिद्धिनायकायनम, गंगहस्तायनम, या
वर्णीकदयायनम, उन्नयवाहनायनम, ॥ श्रीवाहनदी ॥ वि
निष्कनज्जका ॥ गालसयूजा ॥ नन्दार्थनम, रुद्रार्थनम, सुम
नार्थनम, सुगालार्थनम, सुहृथनम, उगल्लानम, ॥ श्रीवाहनदी

दी॥ वीरभानजजका॥ कोमानीयूहा॥ वृक्षा न्येतम, माह ४५ थो नम
कोमार्थे नम, वैषुधे नम, वाना के नम, वेद्ये नम, याम्भुआये
नम, मरुसकी नम, नवदुर्गये नम, यनाशक यनम, शाकिधना
यनम, मयनाशनायनम, नका लावनायनम, वामन रूपायनम
कोमानि मूलयनम॥ आवाहनादी॥ वीरभानजजका॥ वल्लिपू
जा॥ दकोद न क गुवा लायनम, नका लावन क गुवा लायनम, न

प्रवहुरुवाय नमः॥

मोद्रु को गुवा लायनम, त्रुस जि को यनम, असिर्गिग र न वायनम, नू
रूड हे न वायनम, य ३ रु न वायनम, को प हे न वायनम, उ न ल रु
न वायनम, क पाल रु न वायनम, ली प ल रु न वायनम, हं ल न रु न वा
यनम, ख ल न रु न वायनम, व हि द्वा न रु न वायनम, सर्व के
गुवा लायनम, सर्व ल न रु न वायनम, सर्व पि शा व रु न वायनम॥ आवाहनादी
॥ कलशयूजा॥ वृक्ष ल नम, विष्णु व नम, र द्रु यनम, गंगा यनम, य
मनायनम, हन ख रु नम, ग लु के नम, को णि रु नम, जा रु नम

गङ्गा नीलसर्ववृक्षा नीलचन्दनप्रतिष्ठा कर्ता ॥ तृण ध्वजं दन ॥ कपूनी
गुच्छकस्तुरी, नानागन्धादि संयुता ॥ शृङ्गर्ता मङ्गलार्थाय सुख
देवी प्रसीद मे ॥ दुर्घा कर्ता ॥ दुर्घा कर्ता यन्त्र दिव्य, सर्ववृक्षा लम्बालम्बनी
कुसुमसकतयुक्त, तृण देवी प्रसीद मे ॥ यज्ञायवीता ॥ अष्टमगन्धस्यै क
द्वयवीतं सुहा रिनी ॥ शृङ्गर्ता देवी तत्तुष्टी नहा देवी वनप्रद ॥ माला
पूज्य ॥ माला त्रिवर्ण धानी, मालायाति सुहा रिनी ॥ मया देहं

पुत्रं अर्चयन्त्युत्तमविधि ॥ आदितावारुता व्याख्यात

हृदयार्थः ॥ ४८ ॥ कर्त्तव्यं नमस्कृत्य ॥ यद्वाप्यद्वैतसिद्धिं सञ्जानं तद्वा
सुष्ठुहातमी ॥ ४९ ॥ कर्त्तव्यं तद्वा नमस्कृत्य ॥ महायद्वाप्यद्वैतसिद्धिं सञ्जानं तद्वा
नीत्यात्यस्येन दिव्यं यदीदृशं शिववत्सहं ॥ ५० ॥ यद्वाप्यद्वैतसिद्धिं सञ्जानं तद्वा
४८ कर्त्तव्यं तद्वा नमस्कृत्य ॥ ध्वनय ॥ कन्दयत्तु सञ्जानं सर्वद्वैत
प्रियं कन ॥ कर्त्तव्यं तद्वा नमस्कृत्य ॥ दमनं तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥

तद्वा नमस्कृत्य ॥ मिर्मा मास्तीरुक्त्वा नीतं सयातवा ॥ ४८ ॥ कर्त्तव्यं तद्वा नमस्कृत्य ॥
साय ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥ धूप ॥ नमस्कृत्य तद्वा नमस्कृत्य ॥ दग्ध ॥ द
क्ष मथापि ॥ अग्निं तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥
दीप ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥
दीपदीपार्थं ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥ तद्वा नमस्कृत्य ॥

कामी देवी ह किमं अच लंकिन ॥ अष्टितं मवनद हि, पवित्र लव
न हीति ॥ शतारु लं विविध सीतानं मनी नाम मन्त्र मूल मी गृहान
द वी ह स्वार्थ देहि मां कौं ह लं मना ॥ मासि ॥ गृहान लवार्थ मन्त्र
पू गं स्वदि नत वच ॥ नाना न स नाना य कौं ह लवार्थ मन्त्र मनी ॥
॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥

॥ ॥ ॥

गौरीपुत्राया के

नव द न पू गं अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥
न मासु ग उ मा देवी स लाना पाप ह निह ॥ गौरी क जननी गु
त्यं ह लाना प न मन्त्र मनी ॥ सिंहासन सना द र, खर्च ह ~~ह~~
न क म निती ॥ उ ल सारु य ह लं व, व न्दि ता ह न ह न्दनी ॥ अर्थ
दर्श न ह दीपा ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥ अर्थ ॥

नरवधनध्वनी॥ हं मवर्ध विविग्रामी, त्रिनर्गं कमलाननायद्वा
सनस्त्रिगालक्ष्मी, वन्दिताभिनिर्जन्मनी॥ चतुर्भुजा महादेवी,
अथर्वबुद्धमहिता, दक्षिणवर्तनायाहि, वन्दितासिद्धिमा
ध्वनी॥ सर्वार्थकारिणी, सर्वलक्षणसंयुता, सर्वसिद्धिप्रद
देवि, वन्दिता सर्वमर्गला॥ नृद्वर्गस्त्रिगर्गयै विष्णुसार्क वन्दिता

त्रि॥ प्रलयहिनिमृत्युर्देवदत्तममिर्कध्वनी जगद्गुणायनायै
लक्ष्मीसंपददायिनी॥ यद्यप्येकस्मिन्निमानानां प्रयोगादिरिच्छते
॥ पापाहं दक्षिणार्धशकः॥ विहर्तुना॥ ॐ नमो नमो निवृत्त
समाय ॥ १०० नमो नमो दिव्याय ॥ ॥ न त्वत्प्रकाशिविद्वत्प्रकाश
छिनसायहं॥ वासुदेवात्मनो भक्तकथयामि विधानकं॥ अक्षिणोऽव

अननव्रतनाशन, पूनाखर्जनाशननाश। सकलमकृतपाप, लक्षाकोत्तर
लंहीन॥॥ सूर्य उवाच॥ श्रुयतां यावद्व॥ (अ) क. नै. लाकद्व. लं. न. था. अ।
दि. ल. व्रतनाख्यानं, मा. ल. लम्प. लाकद्व. लं. ॥ अ. दो. द. न. श्रुय क. लं. वं. लानं क.
योनू. विधि न. य. अ. पूर्व. कुजग. सर्व. क. लं. वं. धर्म. मा. च. न. तू. अ. वि. वि. यु. या.
या. र. ग. व. न. स. वि. ता. ध. र्म. स. र्वा. या. कृ. ति. का. न. क. ॥ द्वाद. शी. वर्ष. सं. पू. र्ण. पू.

नायापमया कथं॥ सूर्य उवाच॥ सकली सविता धर्म, तद्वत्तस्य प्रशव न॥
विधानं देव सर्वेषां, शांतिरिह॥ पू. ल्ध. क. र्म. रि. ॥ क. ता. ग. ला. नू. के. ला. शी. से.
ला. क. पू. जि. न. स. दा. ॥ दे. वी. र्क. ज. ग. सर्व. ग. ता. क. वि. श्र. मा. स. र्ग. ॥ ॐ. ति.
श्रु. ला. य. श. र्का. र्क. ज. ग. म. द्. हि. नं. दि. वी. ॥ ग. ला. वि. धि. न. म. स्क. ल. व. र्ण. सर्व. स.
दा. पू. र्ण. ॥ स. य. दं. प्र. अ. र्थ. मा. न. न. ल. य. अ. द. य. ॐ. ति. ध्रु. वी. ॥ ॐ. ति. दे. वी. ग. ता. वा. या.

माका (१३) नृपसहसा॥ सत्यं वदामि तं ना ज्ञानं, मदीयं प्रार्थितं लया॥ ॐ नमो
सुतना कल्या, जीवितं नयथा जनी॥ कामसा कवर्त पाका, ॐ स्वस्ति नमो
जीवाणि नृपसहसाकी, सर्वार्थां तत्तत्सुतना गी द्यम सुतुक्क, यूजनं त्रिको दव
ना॥ याये ४ यूये तथाये ४, मनया जया लर्मी, यूजयी ला विधानेन, नरुल
त्र विदुल्यती॥ यद्विद्वि उवाच॥ त्रैलोक्यं धर्म विद्ध्यं, न कुर्याद्वर्त्ममावनन्

विधानं च वसर्वर्षा, प्राप्ताति लुलना गति॥ ॥ द्वादशसूत्रो वाच॥ मासमासे वि
(४) षष्ठ्य, लाने लाने वि (४) षष्ठ्य॥ चन्दनं मासमासं द्वादशं न कस्युक्क॥ न क
वर्ततथा षष्ठ्य, दुर्वा कर्तव्य कर्क॥ ने वदं मासमासं च, नान्यत्तं सुतदादणी॥
पञ्चान्नं द्वादशीयुक्क, धूपदीपघृतं मयं॥ तमु गखा यकं येव, सूर्यं ४ संपु
ष्टं दंतता॥ उपसां चक्र जका ४, यथा ३४ लि सम कर्त॥ यथय चकू वि

धनं नैव, ॐ कृयावनदान्य ॥ न कवच नु संपूर्ण, न ग्रहार्थे स्मृतं न
म ॥ मार्गेशिर्षादि एव न कवच न हृषटी । कनवी नयु व्यमाता
कन्दू न धूपसंयुता । तीर्थरु सो दक सानि, नैव इति न धृञ् कर्ता । प्रा
गर्त (ध्वन न न्द्र सु द्वा द र्ग पान न निव ॥ सानि वि काद्या च द
स्या, विमाने न मि र्षा स्मृता । सर्वेषां धर्म कर्तृ, वक्ता सा स गच्छति ॥

विष्णुसूर्य उवाच ॥ योष विष्णु मय दर्व, (मे सा च न्द्र न निरुषा धान क
पृथक् न मायुर्कं गुणु न्द्र धूपदा ययत् ॥ उक्त्वा निरुमाने च, नैव इति द
धिरु र्म । यत् नैव प्राण कृत्वा तु, गनीनं कृष्टवर्जयत् ॥ त्रिकाटिका
ईकाठिय, विष्णु लोकं स गच्छति ॥ वत् न सूर्यो वाच ॥ माय तु वत् नैव
वै लालपृथक् न कर्क । चन्द्रनं का ष्टयदीव, शिव लोकं च धूपय ॥

मधुमानं समादाय, नेवयंनका धनकी । प्राधनं तुल जी कुर्या, क्रीते
प्राफ कामना ॥ त्रिंशका द्याद काटि स्यात्, शिवसा केतु गच्छति ॥ रा रा ल
हृय उवाय ॥ रा रा (७) हृय द वंच, कनू लं पय्य की शित ॥ ३२ ग्ने री व
न्दनं शृङ्ख धूयी चापिन वंशु रं । खलु वा निहानं च, नेवयं दधी न
धू, प्राधनं तिल कुर्या, द्याद शायान ल निच, त्रिंश काटि स्याद काटि

स्या, ३४४ मधुल लरुत् । पुना नावल लज न्मश्च, विमा नन सग ति ॥
ये त्रुलानु वा ॥ ने वं वरानु दवश्च कस्तु ती व न्म ना निच । पूष्यं तु ३
सामादाय, धूयं चालं वधूय यत् ॥ द्य ना म्बु स्नान की तीर्थ, नेवयं द्युत
खलु के । दधि श्रयान ली कुर्या, स्र नर्ज न्मन विद्यते ॥ यश प्राफ रु लं त स्य
धन धनी चवर्द्ध यत् । त्रिंश काटि स्याद काटि, ०० नु सा के नहीयते ॥

॥ वैष्णवपनसूर्य उवाच ॥ वैष्णवपनाय नमः, शाखतुल्य नन्दनयन । हृद
यं न काप्यर्थं च, कस्तुरीव यमलम् । सर्वतीर्थदक्षिणानं, नेत्रयानि ललरु क
र्ण । प्रागर्न (गमनं) कुर्या, अखिला कक्षसंहितं ॥ अथ रात्रौ उवाच ॥
अथ रात्रौ रात्रौ दत्तं, कथं न च नानानि च । वनं कुरु लक्ष्मीपथं, खलु न
राक्षसपथं । वानरवर्गदकलानं, नेत्रयानि गतं सूर्यं ॥ कुरु (गमनं) दक

प्राप्तनम्, अथ मधुलललरु ॥ त्रिंशकोट्योर्द्धकोटि व वायुयुग्मं सग
च्छति ॥ अथ रात्रौ विसूर्य उवाच ॥ अथ रात्रौ वयं दत्तं, कस्तुरी कथं न च न
न । कालिकं न काप्यर्थं च, न कवनधूपयं ॥ प्रागर्न यश्च गमनं च, नेत्रय
यवसंयुतं ॥ प्रागर्न मन्त्रिर्व कुर्यात्तु द्वादशं पात्रमनियं । त्रिंशकोटि
सार्द्धकोटि, दन्तलाकवसं नन ॥ अवलगहति नूवाच ॥ अवल

गरुडिंदर्व, अशुचं नानिवा। न कां प्राणपूर्व्यं च, अशुचं धूपकं न
था। तीर्थजलयय ४ स्नानं, पिबान्न न नेवयकं। प्राशनं यनकं कुर्या
वृत्ती नीतमपदानया। एतन्निर्हृयायस्था, त्रिदिवं च सगच्छति ॥ ॥
राडयदहस्य उवाच ॥ राडमाहियमादवी, ललाटवाहचन्दनं। न क
पद्मसर्मपूर्य, धूपं खलुचवीरुमं। तीर्थं कृष्टादकं स्नानं, नेव

यं ८४ गतं तुल्यं। ८४ गतं वृत्ताशनं कुर्यात्, हनिदानं तुल्यं लक्ष्मी ॥ ॥
आश्विनीहि नक्षत्रं राहस्य उवाच ॥ आश्विनीहि नक्षत्रं दर्व, तुल्यं
चन्दनानिवा। न कां मधुनपूर्यं च, चतुर्धूपं च कानयं तु ॥ नार्जुन
नकं स्नानं, नेवयं यथादधि। प्राशनं खलुचतुर्धूपं, कामनामनसाव
री ॥ कार्तिकदिवा कनहस्य उवाच ॥ कार्तिकदिवा कनदर्व, शीखलु

यत्न कर्तव्यं तथा। जवाजानी दृष्टयेव, उषध धूप वापयतु॥ सुवस्त्रेण
धातुन स्वयं नैव यत्र कर्तव्यं। दुष्पथं प्रशान्तं कुर्यात्, नृपानी सुख्यं
गच्छति॥ त्रैलोक्यं यत्र नृणां, ब्रह्माधिपतुर्गमः। कर्तव्यं नृपतये नृपतये
लोक्यं दुर्लभं वृत्तं। देवानां दानं नृपतये, कर्तव्यं नृपतये नृपतये॥
ध्यानं वैवर्धनं, वाग्वर्धनं च लभ्यते। अहं ह्यर्थं नृपतये, दानं
दद्यात् द्विजोत्तमं॥ दुर्लभं वृत्तं विधीधर्म, रुसना सिद्धं तमं। वानं

नृपकर्मण्यं द्वादशीवर्षं तावत्तु। विधानार्थं नृपतये, किं पृथक् स तमं
वयं॥ प्रतिष्ठा नीलकर्मण्यं, विधानं कानयं द्विजशायक संलान संलुला, पूज
यीत्वा द्विजोत्तमं॥ सुख्यं विन्त्यं दानं, वस्तु दद्यात् समाचरात् तस्य पातु
गुणान् विव, विधानं तद्वत् स्मिन्। द्वादशीं हि संयुक्तं, तन्निधं द्वादशीं व
नं॥ कार्त्तिकं यदा तर्कं दिनयत्तुं तु कानयत्तु। हं ह्युत्तं द्वादशीं पदं क

संज्ञादर्थं तथा ॥ लिखितं शिवसुकिंय, नृपाणां धर्मकानय ॥ दिनस्य क
पुकलंय, सूर्यस्य कर्मलानय ॥ शिलाकदसहं कर्मात्, देवानी वनसल
मी देवानी दक्षिणा दद्यात्, ब्राह्मणा नीतमप्रद ॥ दातव्यं धर्मं भस्म
शिलाकं धर्मपुत्रक ॥ अकादशी सहस्रस्य, कन्यादानसना निचातीर्थ
काठिकृतज्ञानं, तद्धर्मं न विवात ॥ शिवना ग्री सहस्रस्य, कन्याजागन हीर

वत् ॥ मया गनी कृतं कृतं, तद्धर्मं न विवात ॥ उदयवृक्षं नृपय, मध्याधुन
हं धन ॥ अकमानं स्वयं विष्णु, ग्रीविष्णु लिदिवाकन ॥ अहं विष्णु नहं वक्रा, अ
हं नृपमहं धन ॥ उमाया सहस्रं दत्तं, तद्धर्मं न विवात ॥ ॐ हत सीखं का
मय, धनधन्यं नृपय ॥ पृथिवी समं दाधन, तुल्यं नातिहृलं लर
तु ॥ विपदी संपदं धर्म, कामयापि हृलं नृप ॥ पत्रं मा ककामय, पुन
नावलं जन्म नि ॥ हि लोका कपायानी, पुननावलं जन्म नि ॥ वाहनं राखनम

कै. द्वितीयं द्वादशदिनां पूर्वज्ञानानुना जन्म तस्य पृथग्भवे कं। प्राप्तायादि कथ
नस्य दवग्रथनुपीनर्त्त॥ सर्वेषां कविप्रिना सफपाया कथं नय। सर्वभाषि वि
निर्म्मा, सर्वकास रूपद। सद्दि सिद्धिप्रदा नित्यं त्वय्येवाकं सगुरुनि ॥ ॥

ॐ नि आ दि त्य वा न वृ त्त वा र धा न ॥ ६३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

41111111 11111111 11111111 11111111 11111111 11111111 11111111 11111111

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वदा भवति ॥
तस्मात्पश्यन्मम परमं हृदि ॥
तत्पश्यन्मम परमं हृदि ॥
तत्पश्यन्मम परमं हृदि ॥
तत्पश्यन्मम परमं हृदि ॥
तत्पश्यन्मम परमं हृदि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
सर्वत्र भगवत्पदं सर्वदा भवति ॥
तस्मात्पश्यन्मम परमं हृदि ॥
तत्पश्यन्मम परमं हृदि ॥
तत्पश्यन्मम परमं हृदि ॥
तत्पश्यन्मम परमं हृदि ॥
तत्पश्यन्मम परमं हृदि ॥

